दृश्य-एक
पृथ्वी वंदना

सतगुरु की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार,
लोचन अनंत उघाड़ियाँ, अनंत दिखावनहार।।
नमन करूं सुमिरन करूं, बन्दौं पृथ्वीमाय।
तीन लोक नौ खण्ड में, कीर्तिलता फहराय।।
हरी-भरी जरख़ेज़ मां, झिलमिल-झिलमिल आब।
तू मोती कयनात का, लाजवाब नायाब।।
अकथ कथा जो दुखभरी, किसको क्या बतलाएं।
लपंट की बंधक बनी, विपुला धरती माय।।
बहुतक देखे सूरमा, ताकतवर ज़रदार।
रौंद कुचल चलते बने, कर इसको बेज़ार।।
दिल-दिमाग आब-ो-हवा, सबमें ज़हर मिलाय।
बेकसूर के ख़ून में, इसको रहे डुबाय।।
बोल अरी अब बोल तू, धरती माता बोल।
जोर जुलुम के सब क़िले, होवें डावांडोल।।

दृश्य

(चाय की दुकान) (अखबार पढ़ रहे हैं)

1. : ये लो भाई! हर छह महीने बाद भविष्यवाणी कि दुनिया नष्ट हो जाएगी, प्रलय आ जाएगी।
2. : सही धंधा है। लोगों को डराओ और लूटो। अबकी बार किस महाराज ने अंधेरे में तीर चलाया।

1. : महाराज! नहीं वैज्ञानिक कह रहे हैं मैं तो।
2. : वैज्ञानिकों का भी सत्यानाश हो लिया।
3. : देखो जी! प्रलय तो होनी है। मामूली-मामूली बचते हैं हर बार।

1. : लिखा है। कार्बन उत्सर्जन से तापमान में वृद्धि, गलेशियर पिंघले, समुद्र दल बढ़ने का खतरा, तटीय शहर बर्बादी के कगार पर।
2. : इन पढ़े-लिखे लोगों का भी ग़ज़ब है। बोलने में किसी को आगे नहीं जाने देंगे। ठीक है इनकी भी कसरत!

1. : लिखते हैं। ऐशो-आराम तलब जिंदगी, कारें, ए.सी., रेफ्रिजरेटर, नई तकनीक के अंधाधुंध गैर जिम्मेदाराना तरीके से इस्तेमाल ने बढ़ाया जीवन का संकट।
2. : आदमी कमाता किसलिए है। अपने बाल-बच्चों के आराम के लिए। सुख-सुविधाओं के लिए। बाबा जी ही बनना है तो सारी उम्र हाड काले क्यों करते।
3. : ठीक बात है। सब कुछ यहीं रह जाना है। खर्च करो। मजे से रहो, ऐश करो। भाई! जिसके पास है वो तो खर्चेगा। कार भी लेगा और हेलिकॉप्टर भी। जिसकी जितनी गुदड़ी। सब किस्मत की बात है। अच्छा यूं बता ये कार्बन क्या सौदा है?
4. : कार, ए.सी.! रोटी मिल जाए ये कम है। गुजारा तो होता नहीं। खाने के लाने हैं कार्बन उत्सर्जन।
2. : एक-एक ऐसा आदमी पड़ा है जिसके पास 20-20 कार हैं। कुत्ते भी गाड़ियों में चलते हैं और ए.सी. से बाहर नहीं निकलता।
4. : फिर वो कोईआदमी हुआ। करे कोई भरे कोई। दोष पूंजीपतियों का, मरै गरीब आदमी।
3. : ये कार्बन क्या सौदा है।

कारपोरेट मीटिंग

1. : हमें भैंस नहीं दूध पर फोकस करना है। हमें भैंस नहीं दूध चाहिए। मक्खन चाहिए, दही चाहिए, पनीर चाहिए, घाघ चाहिए, खोहा चाहिए वगैरह-वगैरह। भैंस का गोबर चाहिए, खाल चाहिए, सींग चाहिए, मांस चाहिए, भैंस नहीं चाहिए। मार्केट के एंगल से सोचिये। Be Practical. भैंस की बजाय अपना ध्यान, एनर्जी और investment product पर लगाओ। Food processing industry पर लगाओ, पैकेजिंग और destribution पर लगाओ, media management पर लगाओ।
2. : पर सर भैंस!
1. : भैंस रहेगी। जब तक लोग हैं भैंस ही रहेगी।
3. : पर सर चिड़िया तो नहीं रही।

1. : एक खास किस्म की चिड़िया खत्म होने से क्या फर्क पड़ता है और कितने तरह की चिड़िया हैं। इतने जानवर हैं, जंतु हैं। अगर एकाध प्रजाति विलुप्त हो भी गई तो कौन सा आसमान गिर पड़ा। लेकिन प्रगति ? विकास ? वक्त पीछे नहीं जा सकता। हमें आगे बढ़ना है, बहुत आगे। हम नहीं जानते इसमें कितनी प्रजातियां हमारे, मतलब इंसानों के साथ आगे बढ़ेंगी, हमें नहीं पता इंसान भी कितने हमारे साथ आगे जाएंगे। पर प्रगति तो होनी है। Be practical भावुक होकर बिजनैस नहीं होता। बाजार भावनाओं से संचालित नहीं होता, बल्कि भावनाओं पर operate करता है। गहरा दृढ़निश्चय चाहिए। मुनाफे पर फोकस करो, opportunity को avail करो। मौके बार-बार नहीं आते।

(तालियों की गड़गड़ाहट)

2. : पर सर आदमी तो चाहिए।

1. : आदमी नहीं चाहिए। मज़दूर चाहिए, उपभोक्ता चाहिए। आदमी की कोई कमी नहीं। मजदूरों की Psychology को समझिए। ये हमारीत रह इंसान नहीं, जो जुकाम से ही हांफने लगते हैं। ये मज़दूर हैं। ठीक होते हैं, इतनी आसानी से नहीं मरते।

2. : पर सर : मीडिया का क्या करें ? रोज खबरें आती हैं। मारुति में इतने मजदूरों की छंटनी, लाठीचार्ज, लिबर्टी, भूख से मौत, पाले से मरे, लू से मरे, products की वजह से life descase बढ़ी, प्रदूषण, जमीन अधिग्रहण, pesticide मिलावट, FDI, Climate Change, Global warming और Scientist का क्या करें।

1. : (हंसता है) भगवान है ना! ये सब भगवान के खेल हैं। कुदरती कहर भगवान लाता है। आप लोग इन कीड़े-मकौड़ों को छोड़कर बिज़नेस पर फोकस करो। एनजीओ बनाओ। फण्ड रीलिज करो। (सैक्रेटरी को कहता है) सैक्रेटरी। गृहमंत्री को फोन लगाओ।

दृश्य

अन्तर्राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (सभी देशों के झण्डे लगे हुए हैं) भारत, चीन, अमेरिका व अन्य देशों के प्रतिनिधि उपस्थित हैं।

स्टेट सैक्रेटरी : सभी देशों का इस अन्तर्राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन सम्मेलन में स्वागत है। सबसे पहले इस सभा को संबोधित करने के लिए हम आमंत्रित करते हैं सभी राष्ट्रों के अधिपति, महामहिम, सर्वशक्तिमान व ग्रेट अमेरिकन प्रेसीडेंट बराक ओबामा को।

ओबामा : फ्रैंड्स! हम यहां इसलिए इकट्ठा हुआ है कि वर्ल्ड एक बड़ा crisis से गुजर रहा है। climate

change का संकट। हम सबको इसके लिए मिलकर कोशिश करना होगा। हमारा देश इसमें आपकी पूरी मदद करेगा। क्योंकि हमारा कन्टरी अमेरिका एक developed countary है। हमने खूब विकास किया है। इसलिए हम विकासशील देशों को एक हिदायत देना चाहता है कि आप अपनी dovelopment पर रोक लगाइए। ये सब विकास की ही वजह से हो रहा है। अगर आपने रोक नहीं लगाया तो earth का संकट बढ़ जाएगा। देखिए हम तो develop कर चुका है। हम अपना कदम पीछे नहीं कर सकता। पर आपका देश ये कर सकता है। इसी से पर्यावरण बच सकता है। विकसित देशों का ये हक है कि वो विकास करे। पर ये गरीब गुरबा वाला देश तो जानता है ना कि कम में कैसे गुजारा किया जाता है। हम world bank के जरिए आपको कर्ज देगा। जितना चाहे ले जाएं। पेड़ लगाएं। पर्यावरण बचाएं। ये आपका कर्त्तव्य है।

मंच सैक्रेटरी : अब हम invite करते हैं तीसरी दुनिया के बड़े विकासशील देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री मनमोहन सिंह जी को। ये उस देश से वास्ता रखते हैं जिस देश में गंगा बहती है।

मनमोहन : आदर और सम्मान के योग्य महामहिम द ग्रेट अमेरिकन प्रेसीडेंट बराक ओबामा जी और अन्य देशों के प्रतिनिधि। हम आपकी बातों से बिल्कुल सहमत हैं। आप जो कहेंगे, हम वो करेंगे। पृथ्वी पर संकट है और हिन्दुस्तान में धरती को मां माना जाता है। हम अपनी मां को दगा नहीं देंगे। हम कड़े फैसले लेंगे। FDI में आपने देखा ही है। हम हिन्दुस्तान में 70 करोड़ पेड़ लगाएंगे। गोबर गैस प्लांट लगाएंगे। हम अपना वचन निभाएंगे। क्योंकि हमें कुछ और आता हो या न आता हो। प्यार निभाना आता है।

मंच सैक्रेटरी : अब हमारे सामने आ रहे हैं चीनी प्रेसीडेंट।

चीनी प्रेसीडेंट : हम सभी देशों की कही गई बातों का सम्मान करते हुए कहना चाहते हैं कि ये ठीक है कि पृथ्वी को बचाना सबकी सामुहिक जिम्मेदारी है पर ये ध्यान देने की बात है कि जो देश इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं वो इसे रोक भी नहीं सकते। मैं तीसरी दुनिया के विकासशील देशों की बात कर रहा हूं। वे इस संकट के लिए जिम्मेदार नहीं हैं। वास्तव में विकसित देश जैसे अमेरिका इस संकट के लिए ज्यादा जिम्मेदार है। अकेला अमेरिका ..... प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन करता है। अमेरिका को इस पर लगाम लगानी चाहिए। लेकिन अमेरिका इस से पल्ला झाड़ रहा है वो इसकी जिम्मेदारी विकासशील देशों पर थोप रहा है। ये नहीं चलेगा। अमेरिका अपनी राष्ट्रीय नीति, आर्थिक नीति ठीक करे। मल्टीनेशनल कंपनियों पर प्रतिबंध लगाए। वो इसकी जिम्मेदारी ले।

दृश्य

निर्देश-(बीच में एक रोड पर विभिन्न उत्पाद जैसे: दूध, दही, गाजर, जामुन, पानी आदि की पैकेजिंग को लटका कर standing रोड पर खड़ा करना है। दोनों तरफ से तो कलाकार ऊपर से नीचे तक आदम कद पोलीथिन में लिपटे हुए स्टेज पर दोनों कॉर्नर पर खड़े होंगे। दूसरे कलाकार बारी-बारी से आकर उन पर पैकेजिंग अभिनय करेंगे। टेप आदि के साथ। बीच-बीच में कुछ कलाकार आकर उत्पादों को खरीदने का अभिनय करेंगे, लेकिन दाम अधिक होने की वजह से खरीद नहीं सकेंगे फिर एक धनाढ्य आकर सारा माल खरीद ले जाएगा)

[पीछे से कविता भी आ सकती है]

दृश्य

यज्ञोपवती का दृश्य

(5-7 पंडित सूखे के निदान के लिए यज्ञ करने के लिए इकट्ठा हो रहे हैं)

[कुछ नेता, गणमान्य व्यक्ति, Industaralist, मीडिया और आम जनता भी है]

आम व्यक्ति-1 : कह रहे हैं हिन्दुस्तान के एक से बढ़कर एक पंडित इस यज्ञ को करने के लिए आए हैं।

व्यक्ति-2 : हां खुद पर्यावरण मंत्री भी आहुति डालेंगे।

व्यक्ति-3 : ठीक है भाई। इनकी भी देश के प्रति जिम्मेदारी है।

व्यक्ति-1 : पूरे 101 दिन चलेगा यज्ञ। कह रहे हैं आखिरी दिन बारिश जरूर होगी। वैसे पहले भी हो सकता है।

व्यक्ति-3 : बड़े ज्ञानी, महानुभाव पंडित हैं पहले से ही सब बता रहे हैं। आशीर्वाद लेकर जाएंगे।

यज्ञ शुरू हो जाता है।

पंडित : महापंडित श्री श्री 1004 .....जी अभी तक क्यों नहीं पहुंचे।

आयोजक : जी, उनकी गाड़ी का ए.सी. खराब हो गया था। अभी पहुंचते ही होंगे।

इंडस्ट्रियलिस्ट : उफ! इतनी गरमी है। ए.सी. क्यों नहीं चलवा देते।

2. : यहां कैसे चलेगा। यज्ञ हो रहा है ना।

इंडस्ट्रियलिस्ट–2

आयोजन करके : सुनो मुझे मेरे रूम में जाना है। आराम करना है। किसी को भेजो।

आयोजक : अभी भेजता हूं सर। इधर आओ (किसी को इशारा करता है) सर को कमरे में जाना है। छोड़कर आओ। ए.सी. वगैरह चैक कर लिए थे ना।

मीडियाकर्मी

आपस में : ये यज्ञ कर रहे हैं दूसरी तरफ साइंसटिस्ट कह रहे हैं कि ये सब climate change, global warming की वहज से हो रहा है और जब तक ए.सी., मोबाइल, फ्रिज वगैरह का इस्तेमाल कम नहीं होगा। फैक्ट्रियों से पैदा होने वाली गैस कम नहीं होगी। ये सब तो बढ़ेगा ही। अकाल पड़ेंगे। पृथ्वी नष्ट हो जाएगी। क्या मानें क्या नहीं?

मीडियाकर्मी : ये सब यहीं तो करते हैं। ये Industrialist ये नेता लोग। अब अब ये कहे कौन।

मीडिाकर्मी–2 : ठीक बात। कौन बिल्ली के गले में घण्टी बांधे। हमें तो रिपोर्टिंग करनी है। सो करेंगे। चलो मंत्री जी का इन्टरव्यू लेते हैं।

स्टूडियो में

मीडियाकर्मी : देख रहे हैं। एक तरफ सूखे के निदान के लिए यज्ञ हो रहा है तो दूसरी तरफ महाराष्ट्र में गुसलाभार बारिश हो रही है। लोग मना रहे हैं इन्द्र देवता को कि वो अपना प्रकोप कम करें पर बारिश है कि थमने का नाम नहीं ले रही। कौन है इसका जिम्मेदार?

* : मॉल पर सिक्योरिटी बढ़ाओ, उन हरामियों का कोई भरोसा नहीं। डी.एस.पी. को शाम को पार्टी में बुलाओ वहीं सब समझा देंगे

* : पर वो हमारे माल पर दलाली क्यूं कर रहे हैं?

* : पिछली बार तो मैंने ही पब्लिसिटी के लिए करवाया था, पर वो तो भाड़े के बंदे थे और अब सचमुच के जंगली–गवार आ रहे हैं।

* : पर क्यूं?

* : कह रहे हैं मॉल पर कब्जा करेंगे।

पुलिस एसपी : पूरी गारद की तैयारी करो, वज्रमान को तैनात करो, और गैस और वाटर को रैडी रखो।

इंस्पेक्टर : सर वज्रपान और वाटर कैन वीआईपी सुरक्षा में लगी है। उनका क्या करना है।

एसपी : पड़ोसी जिले से बुलाओ। इन हरामजादों को सबक सीखाना ही पड़ेगा। सारे रास्ते ब्लॉक कर दो। इनको माल के आसपास पहुंचने भी नहीं देना।

मंत्री : सूरजभान, ये क्या सुन रहा हूं भाई मैं। अपनी ही सरकार के खिलाफ काम कर रहे हो।

किसान : जब वोट दी तभी अपनी थी। अब तो आप उन ए.सी. वालों की ही सुनते हैं। हमारी तो आवाज में कोई दम नहीं।

मंत्री : क्या बात करते हैं और इस मॉल ने तुम्हाराक्या बिगाड़ा, ये तुम्हारी फसल खरीदते हैं और पैसे वालों को बेचते हैं। तुम्हारे फायदे के लिए ही बनवाया है मॉल।

किसान : जिनके घर ए.सी. हैं, उनके पास ए.सी. क्यों हैं, उनके बच्चे ए.सी. स्कूलों में पढ़ते हैं, उन्हीं के लिए ए.सी. बनाए आपने बनवाया है। इस तुम्हारे ए.सी.–वेसी के चक्कर में हम तो बरबाद हो रहे हैं। हर चीज बदल गयी। ना टाइम पर बारिश, न वो गर्मी रही न वो सर्दी। पैदावार घट रही हैं।

मंत्री : मेहनत करना छोड़ दिया, बिहारी मजदूरां पर सारा काम कराते हो। दोष किसका है ?

वैज्ञानिक : इस धरती का तापमान मजदूर और किसानों ने नहीं घटाया, न ही देहातियों ने बढ़ाया। पर इसका नुकसान ये ही झेल रहे हैं। गर धरती के तापमान में 2^0 का भी इजाफा हो गया तो गेहूं की फसल में 30 प्रतिशत की कमी होगी। वो किसी खाद–पानी से नहीं दूर हो सकती।

डॉक्टर : इतनी बीमारियां बढ़ रही हैं, कैंसर, मानसिक तनाव, दिल की बीमारियां इन सब का सम्बन्ध धरती के तापमान में बढ़ौतरी से है। धरती के तापमान को बढ़ने से रोकने की जिम्मेदारी आपकी है। विकास हो पर ऐसा जिसमें ऊर्जा की कम खपत हो और ..... कम निकले।

मंत्री : ये सब होने की बातें न हों।

किसान : फिर जो होने की बात है वो ही होगी। हम शहर पर कब्जा कर लेंगे और सारे सिस्टम को अपने हिसाब से चलाएंगे। सबसे पहले पावर स्टेशन पर कब्जा करेंगे।

न्यूज चैनल का दृश्य

यज्ञोपवती का दृश्य

[दो एंकर, एक जयोतिषी, एक वैज्ञानिक–न्यूज चैनल का बैनर हो सकता है जिस पर लिखा हो 'खबर भागमभाग']

एंकर–1 : खबर (धमाका) भागमभाग में आपका स्वागत है। कुछ ही देर में देखिए हमारा विशेष कार्यक्रम 'विनाशलीला'।

एंकर–2 : क्या बच पाएगी दुनियां ?
कौन है इसके लिए दोषी ?
क्यों नाराज हैं देवता ?
देखिए कुछ ही देर में विनाश लीला.....

(विज्ञापन)

बिरला लाइफ एंसोरेंश–बनपए अपने भविष्य को सुरक्षित....।

बिरला है तो चिन्ता कैसी....।

एकंर–1 : कार्यक्रम में फिर से हम हाजिर हैं विनाशलीला के साथ समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है। डूब जाएंगे दुनिया के कई महानगर। ग्लेशियर पिंघल रहे हैं।

एंकर–2 : तापमान में तोड़ा पिछले पचास साल का रिकॉर्ड। क्यों हो रहा है ये सब।

एंकर–1 : इसी पर चर्चा करने के लिए हमने अपने स्टुडियो में आमंत्रित किया है जाने–माने जयोतिषी श्री बर्फगिरी शास्त्री जी व प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. टी. राघव जी को।

एंकर–2 : आईए अब सीधे सवाल पर आते हैं तो बर्फगिरि जी आप बताइए इस संकट के पीछे आप क्या कारण समझते हैं।

बर्फगिरि : देखिए ये सब कलयुग की देन है, लोग भौतिकवादी हो गए हैं। पाप बढ़ रहे हैं। धर्म पर संकट बढ़ रहा है, इसलिए देवताओं का गुस्सा बढ़ रहा है विनाश तो होगा ही...।

एंकर–1 : टी. राघव जी इस पर आपका क्या कहना है।

टी.राघव : इसका कारण पाप या देवता नहीं है। हमारी समाज व्यवस्था है। प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन का है। अब दोहन कौन करता है ? ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ना। इसको सबसे जयादा कौन बढ़ाता है। इसको जाने बिना हम सच्चाई की तह में नहीं जा सकते।

बर्फगिरि जी : (बीच में ही) झूठ है ये सब।

एंकर–2 : शास्त्री जी आप रूकिए प्लज़..। हां तो राघव जी ये सब कौन करता है।

टी.राघव : बड़ी कॉरपोरेट कंपनियां, विकसित देश जैसे अमेरिका सबसे ज्यादा ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन करता है जो तापमान में बढ़ोतरी का मुख्य कारण है। अमेरिका में भारत से 13 गुना ज्यादा प्रति व्यक्ति ऊर्जा की खपत है। बड़ी पूंजी मुनाफे के लिएजल, जंगल जमीनों के साथ घिनौना खिलवाड़ कर रही है और इस मौसम में बदलाव की मार सबसे ज्यादा गरीब देश और उनकी आबादी झेल रही है।

बर्फगिरी जी : अरे! इसमें अमेरिका और अमीरों का क्या दोष है। उनको भगवान ने बुद्धि और साधन दिए हैं। उसका इस्तेमाल तो करेंगे ही।

टी. राघव : फिर भगवान ने गरीबों को क्यों नहीं दिए ये साधन। उन्होंने क्या बिगाड़ा है भगवान का।

बर्फगिरी जी : ये सब पिछले कर्मों का फेर है। ये सब पिछले जन्म की करनी भुगत रहे हैं।

एंकर–1 : शास्त्री जी रूकिए गुस्सा मत होईए। हम आप से भी बात करेंगे।

बर्फगिरि : अरे क्या रूकिए–रूकिए...। मैं कह रहा हूं यह तभी ठीक हो सकता है जब लोग सच्चे मन से

भगवन का भजन करें और अध्यात्मिक हो जाएं। हमारे ऋषियों-मुनियों की तरह।

टी. राघव : समाज विकास करके आगे जाता है शास्त्री जी पीछे नहीं। यह तभी ठीक हो सकता है जब निजी मुनाफे पर आधारित व्यवस्था को बदला जाए। अन्याय व घोर मुनाफे पर टिकी व्यवस्था में इसको ईक नहीं किया जा सकता। वह तो इसे और बिगाड़ने का ही काम करेगी।

बर्फगिरि जी : (गुस्से से) अरे छोड़ो ये सब बकवास। तुम्हारे जैसे नास्तिकों ने ही इस दुनिया का बेड़ा गर्क किया है। मैं यहां अब एक पल नहीं ठहर सकता... जाता हूं।

एंकर-2 : शास्त्री जी....2 ... सुनिए.....रुकिए.... लोग आपको लाइव देख रहे हैं....।

एंकर-1 : मिलते हैं एक ब्रेक के बाद...।

लड़का-लड़की : ओफ ओ...
ये दुनिया कमबख्त कितनी सुन्दर है
दुखों से भरी फिर भी कितनी भरपूर,
कितनी प्यारी, कितनी सच्ची
कितने ऊंचं पहाड़ हैं, कितने फैले खुले-खुले समुंदर
और आसमान का कोई और छोर ही नहीं
और जमीन जिसके नीचे कुदरत के खजाने हैं
और नदियां और फूल पच्छिम में काले और सफेद
पूरब में पीले और लाल, उत्तर में नीले कई रंग
हमारे यहां चम्पई और सांवले दुनिया में हरियाली कहां नहीं
बादलों से घिरा आसमान।
ये दुनिया हत्यारों सूदखोरों और बारूद के सौदागरों से नहीं
मामूली लोगों ने बसाई है जो दिन रात मेहनत-मजूरी करते हैं
छोटे-छोटे कई काम करते हैं जो अच्छे हैं सच्चे हैं।
जिनका जीवन महाकाव्यों की पीड़ा समेटे हुए हैं।
जिनकी मुस्कान में कोई छल नहीं है।
(लड़का और लड़की बातचीत करते हुए चले जाते हैं)

नान्दी पाठ

सतगुरु की महिला अनंत, अनंत किया उपकार
लोचन अनंत उघाड़िया, अनंत दिखावनहार

नमन करूं सुमिरन करूं बन्दौं पृथ्वीय माय
तीन लोक नौ खण्ड में कीर्तिलता फहराय

सुत्रधार : हरी भरी जरखेज माँ झिलमिल-झिलमिल आब
तू मोती कयनात का लाजवाब नायाब
अकथ कथा जो दुखभरी किसको क्या बतलाय
लंपट की बंधक बनी विपुला धरती माय
बहुतक देखे सूरमा ताकतवर जरदार
रौंद कुचल चलते बने कर इसको बेजार
दिल दिमाग आबोहवा सबमें जहर मिलाय
बेकसूर के खून में इसको रहे डुबाय
बोल अरी अब बोल तू धरती माता बोल
जोर जुलुम के सब किलें होंवे डांवाडोल

(एक बुढ़िया हाथ वाला पंखा चला रही है)

बुढ़िया : हे भगवान इतनी गर्मी सांस लेना भी मुश्किल हो रहा है। इन बिजली वालों का नाश जाए दो घंटे भी बिजली नहीं रहने देते.... हाय...
(कहते-कहते बेहोश हो जाती है)

बहु : (इसे देखकर पति को पुकारते हुए) अजी सुनते हो मां जी को पता नहीं क्या हो गया.... जल्दी आओ ....।

बेटा : क्या हुआ.... अभी तो ठीक बैठी थी

बहु : पता नहीं पंखा करते-करते लुढ़क गई।

बेटा : पानीले आओ गर्मी से बेहोश हो गई हैं। सांस की तकलीफ भी इन्हें पहले से ज्यादा हो गई है।
(लड़का स्कूल से आता है)

पापा : अरे तुम इतनी जल्दी कैसे आए गए।

लड़का : पापा हमारे मास्टर की हर्ट अटैक से मौत हो।

मम्मी : हे भगवान! इतनी खतरनाक बीमारियां हो रही हैं पता नहीं क्यों। कैंसर, टी.बी., सांस के पता नही कितने मरीज हो गए हैं।

लड़का : मम्मी ये सब ग्लोबल वार्मिंग की वजह से हो रही हैं। हवा में ग्रीन हाउस गैसों के कारण कार्बन की मात्रा बढ़ गई है।

दादी : ये साइंस की बात हमें समझ में नहीं आती। लेकिन इतना तो जरूर है कि आजकल आधा जहर खाया जा रहा है। सब्जियों और फसलों में दुनिया जहान की दवाई डाल रहे हैं। पानी में जहर घोल दिया।

पापा : घर में ए.सी. लगवाना पड़ेगा और कुछ नहीं।

दादी : बिजली तो आती नहीं ए.सी. लगवाएगा। उसे क्या पानी से चलाएगा।

लड़का : पापा ए.सी. भी तो वातावरण में जहरीली गैस छोड़ता है।

पापा : चुप हो जाओ वैज्ञानिक।

बन उठी है

देखो न हक़ीक़त हमारे समय की कि जिसमें
होमर एक हिंदी कवि सरदार जाफरी को
इशारे से अपने करीब बुला रहा है
कि जिसमें
फैयाज खां बिटाफेन के कान में कुछ कह रहा है
मैंने समझा कि संगीत की कोई अमर लता हिल उठी
मैं शेक्सपियर का ऊंचा माथा उज्जैन की घाटियों में
झलकता हुआ देख रहा हूं
और कालिदास को वैमर के कुंजों में विहार करते
और आज तो मेरा टैगोर मेरा हाफिज मेरा तुलसी मेरा

गालिब

एक-एक मेरे दिल के जगमग पावर हाउस का
कुशल आपरेटर है।

आज सब तुम्हारे ही लिए शांति का युग चाहते हैं
मेरी कुटूबुटू
तुम्हारे ही लिए मेरे प्रतिभाशाली भाई तेजबहादुर
मेरे गुलाब की कलियों से हंसते-खेलते बच्चो
तुम्हारे ही लिए, तुम्हारे ही लिए
मेरे दोस्तो, जिनसे जिंदगी में मानी पैदा होते हैं
और उस निश्छल प्रेम के लिए

जो मां की मूर्ति हैं
और उस अमर परमशक्ति के लिए जो पिता का रूप है।

हर घर में सुख
शांति का युग
हर छोटा-बड़ा हर नया पुराना हर आज-कल-परसों के
आगे और पीछे युग का
शांति की स्निग्ध कला में डूबा हुआ
क्योंकि इसी कला का नाम जीवन की भरी-पूरी गति है।

मुझे अमरीका का लिबर्टी स्टैचू उतना ही प्यारा है
जितना मास्को का लाल तारा
और मेरे दिल में पेकिंग का स्वर्गीय महल
मक्का-मदीना से कम पवित्र नहीं
मैं काशी में उन आर्यों का शंखनाद सुनता हूं
जो वोल्गा से आए
मेरी देहली में प्रह्लाद की तपस्याएं दोनों दुनियाओं की
चौखट पर
युद्ध के हिरण्यकश्यप को चीर रही हैं।

यह कौन मेरी धरती की शांति की आत्मा पर कुरबान हो गया है
अभी सत्य की खोज तो बाकी ही थी
यह एक विशाल अनुभव की चीनी दीवार
उठती ही बढ़ती आ रही है
उसकी ईंटें धड़कते हुए सुर्ख दिल हैं
यह सच्चाइयां बहुत गहरी नीवों में जाग रही हैं
वह इतिहास की अनुभूतियां हैं
मैंने सोवियत यूसुफ के सीने पर कान रखकर सुना है।

आज मैंने गोर्की को होरी के आंगन में देखा
और ताज के साए में राजर्षि कुंग को पाया
लिंकन के हाथ में हाथ दिए हुए
और ताल्स्ताय मेरे देहाती यूपियन होंठों से बोल उठा
और अरागों की आंखों में नया इतिहास
मेरे दिल की कहानी की सुर्खी बन गया
मैं जोश की वह मस्ती हूं जो नेरुदा की भवों से
जाम की तरह टकराती है
वह मेरा नेरुदा जो दुनिया के शांति पोस्ट आफिस का
प्यारा और सच्चा कासिद
वह मेरा जोश कि दुनिया का मस्त आशिक
मैं पंत के कुमतार छायावादी सावन-भादों की चोटू हूं
हिलोर लेते वर्ष पर
मैं निराला के राम का एक आँसूं
तो तीसरे महायुद्ध के कठिन लौह पदों को
एटमी सुई-सा पार कर गया पाताल तक
और वहीं उसको रोक दिया
मैं सिफ्र एक महान विजय का इंदीवर जनता की आँख में
जो शांति की पवित्रतम आत्मा है।

पच्छिम में काले और सफेद फूल हैं और पूरब में पीले और लाल
उत्तर में नीले कई रंग के और हमारे यहाँ चम्पई-साँवले
और दुनिया में हरियाली कहाँ नहीं
जहाँ भी आसमान बादलों से जरा भी पोंछे जाते हों
और आज गुलदस्तों में रंग-रंग के फूल सजे हुए हैं
और आसमान इन खुशियों का आईना है।

आज न्यूयार्क के स्काईक्रेपरों पर
शांति के **डबों** और उसके राजहंसों ने
एक मीठे उजले सुख का हलका-सा अंधेरा

और शोर पैदा कर दिया है।
और अब वो आर्जन्टीना की सिम्त अतलांतिक को पार कर रहे हैं
पाल राब्सन ने नई दिल्ली से नए अमरीका की
एक विशाल सिम्फनी ब्राडकास्ट की है
और उदयशंकर ने दक्षिणी अफ्रीका में नई अजंता को
स्टेज पर उतारा है
यह महान नृत्य वह महान स्वर कला और संगीत
मेरा है यानी हर अदना से अदना इंसान का
बिल्कुल अपना निजी।
युद्ध के नक्शों को कैंची से काटकर कोरियायी बच्चों ने
झिलमिली फूलपत्तों की रौशन फानूसें बना ली हैं
और हथियारों का स्टील और लोहा हजारों
देशों को एक-दूसरे से मिलाने वाली रेलों के जाल में बिछ गया है
और ये बच्चे उन पर दौड़ती हुई रेलों के डिब्बों की खिड़कियों से
हमारी ओर झांक रहे हैं
यह फौलाद और लोहा खिलौनों मिठाइयों और किताबों
से लदे स्टीमरों के रूप में
नदियों की सार्थक सजावट बन गया है
या विशाल ट्रैक्टर-कंबाइन और फैक्टरी-मशीनों के हृदय में
नवीन छंद और लय का प्रयोग कर रहा है
यह सुख का भविष्य शांति की आँखों में ही वर्तमान है
इन आँखों से हम सब अपनी उम्मीदों की आँखें सेंक रहे हैं
ये आँखें हमारे कानून का सही चमकता हुआ मतलब
और हमारे अधिकारों की ज्योति से भरी शक्ति है
ये आँखें हमारे माता-पिता की आत्मा और बच्चों का दिल है
ये आँखें हमारे इतिहास की वाणी
और हमारा कला का सच्चा सपना है
ये आँखें हमारा अपना नूर और पवित्रता हैं
ये आँखें ही अमर सपनों की हकीकत और
हकीकत का अमर सपना हैं
इनको देख पाना ही अपने आपको देख पाना है, समझ पाना है।
हम मानते हैं कि हमारे नेता इनको देख रहे हों।